Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

"विशेष विद्यालय की भौतिक सुगम्यता के प्रतिश्रवण बाधित विद्यार्थियों की राय"

Prof Mr. Pawan Kumar Mishra, Dr. Gayatri Ahuja *

प्रस्तावना :

विशिष्ट शिक्षा शिक्षाशास्त्र की एक ऐसी शाखा है जिसके अंतर्गत उन बच्चोंको शिक्षा दी जाती है जो सामान्य बच्चों से शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विशेषताओं से थोड़े अलग होते हैं| सामान्य बच्चों की तुलनामें ऐसे बच्चों की आवश्यकताएं भी विशिष्ट होती हैं| इस लिए वे विशेष आवश्यकता वाले बच्चे कहलाते हैं यह बच्चे अपनी सहायता स्वयं नहीं कर पाते| दिव्यांग लोगों के अधिकारों के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCRPD), जिसमें भारत हस्ताक्षरकर्ता है, दिव्यांग तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए सरकारों पर अनुच्छेद 9 के तहत दायित्वों (अ) सूचना, (ब) परिवहन, (स) भौतिक पर्यावरण(द) संचार प्रौद्योगिकी और (ई) सेवाओं के साथ-साथ आपातकालीन सेवाओं तक पहुंचबनाने हेतु प्रतिबद्ध है। UNCRPD और RPWD अधिनियम के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारिता विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालयने एक्सेसिबल इंडिया कैं पेन (सुगम्य भारत अभियान) की अवधारणा को सार्वभौमिक पहुँचप्राप्त करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी प्रमुख अभियान के रूप में संकल्पित किया है, जो दिव्यांग व्यक्तियों को समान अवसर तक पहुँचप्राप्त करने और स्वतंत्र रूपसे एक समावेशी समाज में जीवन का जीने के साथ साथ सभी पहलुओं को सुगम्यता प्रदान करने प्रयास करेगा| श्रवण बाधित वयस्कों के लिए, बधिर खेल आयोजनों में भाग लेना समाजीकरण का एक प्रमुख साधन है। बधिर खेल दूसरों के साथ सार्थक बातचीत के लिए एक स्थान प्रदान करता है जो सांकेतिक भाषा का उपयोग करके संवाद करते हैं वर्तमान लेखमें, हम तर्क देते हैं कि स्कूलों और शिक्षा पेशेवरों को एक श्रवण बाधित बच्चे के समग्र शिक्षा कार्यक्रम के एक महत्वपूर्ण भाग के रूपमें खेल और शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी को देखना चाहिए। श्रवण बाधित बच्चें जो सांकेतिक भाषाका उपयोग करते हैं, उन्हें ही दुविधाका सामना करना पड़ता है इंटरनेट के माध्यम से सेवाओं, वास्तविक समय के कैप्शनिंग और संचार की व्याख्या करना उन्हें समावेशी कक्षामें सीखने या नौकरी खोजने और अपने सहकर्मियों के साथ संवाद करने के लिए बेहतर तरीका प्रदान करता है| " श्रवण बाधित बच्चों के जीवन में खेल का महत्व को देखते हुए क्या असंगत लगता है कि श्रवण बाधित बच्चों के लिए स्कूल के कार्यक्रम और विशेष शिक्षामें साहित्य ज्यादातर श्रवण बाधित बच्चेकी शारीरिक गतिविधियों में भागीदारी के लाभ की उपेक्षा करते हैं"। स्टीवर्ट एंड क्लोविन (२००१)

***Assist.Prof Mr. Pawan Kumar Mishra** (Shri P. K. Mehta Collage of Special Education Palanpur)
Dr. Gayatri Ahuja (A.Y.J.N.I.S.H.D (D) Mumbai)

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

श्रवण वाधित बच्चों को वाणी और भाषा प्राप्त करने में अधिक कठिनाइयां होती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप सामाजिक, शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक और व्यावसायिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। श्रवण दोषन केवल एक संचार समस्या है, बल्कि एक सामुदायिक समस्याभी है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए शैक्षिक प्रबंधन में विभिन्न प्रकारकी बाधाओं को दूर करना शामिल है जो उनके शैक्षिक कार्यक्रमों में बाधा उत्पन्न करता है जैसे विद्यालय, सम्प्रेषण शारीरिक अवरोधों, अनुदेशात्मक बाधाओं, मनोवृ त्ति संबंधी अवरोधों आदि। बाधाओं को दूर करने और सभी बच्चों को उनकी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं, या सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बावजूद स्कूल में लाने और शिक्षण गति विधियों में उनकी भागीदारी को सुरक्षित करने के लिए समावेशी शिक्षा की प्रक्रिया की शुरुआत की जाती है|" (झा, 2002)

अध्ययन की पद्धति:

इस शोधमें शोधकर्ताने दो उद्देश्यों कों ध्यान में रखकर बनाया| (क) विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को भौतिक संरचना के अंतर्गत विद्यालय से सम्बन्धित आनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना| (ख) विशेष विद्यालयमें श्रवण बाधित विद्यार्थियों को भौतिक संरचना के अंतर्गत कक्षा से सम्बन्धित आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना| शोधकर्ता द्वारा लिए गए अनुसंधान के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हु ये प्रतिदर्श का चयन सुविधापूर्ण तकनीकी का इस्तेमाल किया गया तथा प्रतिदर्शो को संख्या ३२ चुनी गई| इस अध्ययन में शोधकर्ताने महाराष्ट्र के मुंबई जिले के कक्षा ६,७,८,९ व १० के विशेष विद्यालय के श्रवण बाधित बच्चोंकी कक्षा की सुगम्यता को ध्यान में रखते हु एउनकी राय के आधार पर चेक लिस्ट का निर्माण किया यह उपकरण स्व निर्मित तथा इसमें १६ प्रश्न पूछे गये| उपयुक्त प्रक्रिया के माध्यम से उपकरण सत्यापन और विश्वसनीयता जांच सुनिश्चित की गई थी।

विश्लेषण एवं विवेचन :

भौतिक संरचना के अंतर्गत दो क्षेत्रों का निर्धारण किया गया है कक्षा और विद्यालय, कक्षा के अंतर्गत हमारे द्वारा 8 प्रश्नों का एक समूह बनाया गया था जिसके लिए ३० बच्चों से संबंधित उनके प्रति उत्तर संकलित किए गए थे जिसका विश्लेषण सारणी संख्या ४.१.१ में दर्शाया गया है|

अ) कक्षा की सुगम्यता–

श्रवण बाधित बच्चे के शिक्षण कार्य को सफल बनाने हेतु कक्षा की सुगम्यता की भूमिका अधिक मानी जाती है इसलिए कक्षा की सुगम्यता हेतु यह जानना जरूरी है एक विशेष विद्यालय की कक्षा में कितनी सुगम्यता प्रदान की जाती है इन सभी का ध्यान रखते हु ए का उद्देश्यों का निर्माण किया गया है तथा उससे संबंधित अनुसंधान प्रश्न भी बनाए गए|

Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

उद्देश्य:

विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को भौतिक संरचना के अंतर्गत कक्षा से सम्बन्धित आनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना|

१ . अनुसन्धानप्रश्न:

विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को भौतिक संरचना से सम्बन्धित कक्षा में कौन कौन सी समस्याएं होती है?

सारणीक्रमांक ४.२.१

भौतिक संरचनाकेअंतर्गतकक्षासेसम्बन्धित		
श्रवण बाधित बालक और बालिकाएं	**हाँ**	**नहीं**
	१९५	४५

इस प्रकार यदि हम अपने कक्षा के उद्देश्य के क्षेत्रों को ध्यान में रखते हु ए यदि हम निष्कर्ष की बात करते हैं तो हमारी भौतिक सुगम्यता के अंतर्गत कक्षा कि सुगम्यता में ३० बच्चों के २४० में से १९५ प्रति उत्तर (हाँ) के आए हु एहैं और इसके अलावा ४५ प्रति उत्तर (नहीं) के आए हु एहैं|

अतःविद्यार्थियों के द्वारा दिए गए प्रति उत्तर से यह प्रदर्शित होता है की वर्तमान समय में भी १९% विशेष विद्यालय में सुगम्यता की कमी है अर्थात यदि हम प्रत्येक १०० बच्चों की बात करें तो अभी भी १९% बच्चे सुगम्यता की मार को झेल रहे हैं प्रस्तुत ग्राफ में यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि ज्यादा से ज्यादा ३० बच्चों में से सिर्फ १० बच्चों को पूर्ण रूप से कक्षा की सुगम्यता महसूस होती है|

ग्राफसंख्या४.२.१

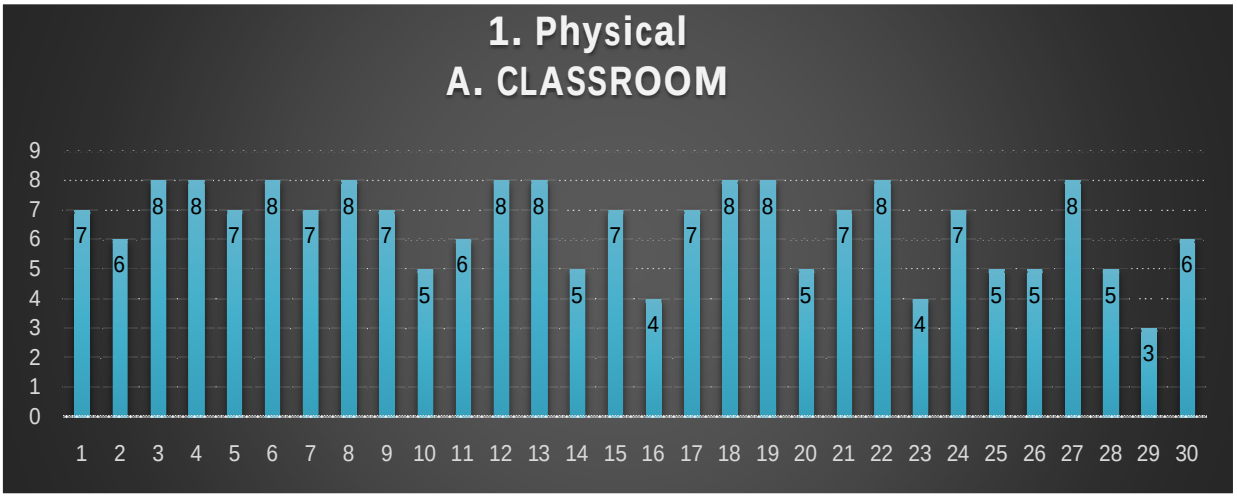

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

जब हम किसी एक क्षेत्र की बात करते हैं तो ३० बच्चों में से ज्यादातर प्रत्युत्तर सुगम्यता की दृष्टि से कम दिखाई देते हैं| यदि हम विशेष विद्यालय में काक्लियर प्रत्यारोपण की बात करते हैं तो ३० में से १६ बच्चों को इसकी सलाह नहीं दी जाती| ऐसे ही कुछ क्षेत्रों में सुगम्यता बहुतअधिक है और कुछ क्षेत्रों में अभी इसकी अभी भी बहुतही कमी है| बच्चे का बौद्धिक विकास ज्यादातर विद्यालय की कक्षा से शुरू होता है और उसकी बौद्धिक विकास को निरंतर बनाए रखने के लिए उसे सुगम्यता देना बहुतही आवश्यक है|

ग्राफसंख्या४.२.२

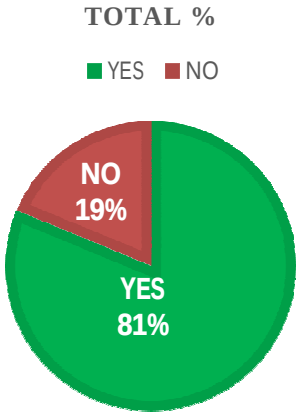

इस प्रकार सभी प्रश्नों के प्रत्युत्तर देखने के बाद यदि हम कक्षा के संपूर्ण सुगम्यता कि बात करें तो हमने इसे एक ग्राफ के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है| ग्राफ संख्या ४.२.२ में यह दर्शाया गया है कि कक्षा की सुगम्यता में ८१% सुगम्यता पाई गई है किंतु १९% सुगम्यताकी अभीभी कमी है जिसकी वजह से कहीं ना कहीं श्रवण बाधित विद्यार्थी उच्चतर शिक्षा में प्रवेश करने में उनको कठिनाई होती है इसलिए जरूरी है कि हम सबसे पहले कक्षा की सुगम्यता पर विशेष ध्यान दें|

ख) विद्यालयकीसुगम्यता-

कक्षा की सुगम्यता के बाद विद्यालय की सुगम्यता उतना ही महत्व है क्योंकि विद्यालय तथा उसके आसपास का वातावरण श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए बहुतही महत्व पूर्ण होता है इसलिए विद्यालय का आंतरिक तथा बाह्य वातावरण श्रवण बाधित विद्यार्थियों की सुगम्यता के अनुरूप होना चाहिए जिससे कि उन्हें शिक्षा ग्रहण करने में कोई समस्या उत्पन्न ना हो| इन्हीं सब क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुएहमारे उद्देश्य पूर्णहमारे उद्देश्य प्रश्न निम्नलिखित हैं

उद्देश्य: विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को भौतिक संरचना के अंतर्गत विद्यालय से सम्बन्धित आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना|

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

२ **अनुसन्धान प्रश्न:** विशेष विद्यालय में श्रवण बाधित विद्यार्थियों को भौतिक संरचना से सम्बन्धित विद्यालय में कौन कौनसी समस्याएं होती है?

भौतिक संरचनाकेअंतर्गतविद्यालयसेसम्बन्धित		
श्रवण बाधित बालक और बालिकाएं	**हाँ**	**नहीं**
	१८४	५६

इस प्रकार यदि हम अपने विद्यालय के उद्देश्य के क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए यदि हम निष्कर्ष की बात करते हैं तो हमारी भौतिक सुगम्यता के अंतर्गत विद्यालय कि सुगम्यता में ३० बच्चों के २४० में से १८४ प्रतिउत्तर (हाँ) के आए हुए हैं और इसके अलावा ५६ प्रति उत्तर (नहीं) के आए हुए हैं अतःविद्यार्थियों के द्वारा दिए गए प्रति उत्तर से यह प्रदर्शित होता है की वर्तमान समय में भी २३% विशेष विद्यालय में सुगम्यता की कमी है अर्थात यदि हम प्रत्येक १०० बच्चों की बात करें तो अभी भी २३% बच्चे सुगम्यता की मार को झेल रहे हैं प्रस्तुत ग्राफ में यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि ज्यादा से ज्यादा ३० बच्चों में से सिर्फ १२ बच्चों को पूर्ण रूप से कक्षा की सुगम्यता महसूस होती है|

ग्राफ संख्या४.२.३

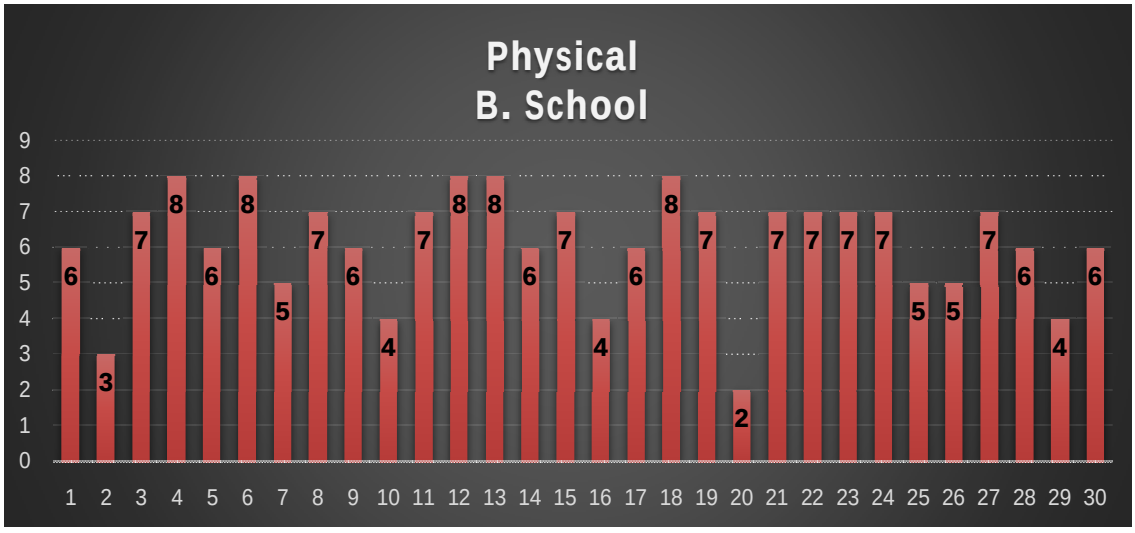

इस प्रकार यदि हम विद्यालय की संपूर्ण सुगम्यता की बात करें तो लगभग ७७% बच्चों को विशेष विद्यालय की कक्षा में सुगम्यता मिलती है और जिसमें २३% सुगम्यता की कमी पाई गई है जैसा कि चित्र संख्या ४.२.४ में दर्शाया गया है विद्यालय कि सुगम्यता के साथ-साथ जब हम किसी एक क्षेत्र की बात करते हैं तो ३० बच्चों में से ज्यादातर प्रत्युत्तर सुगम्यता की दृष्टि से कम दिखाई देते

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

हैं| कुछ सुगम्यता ज्यादातर विद्यालय में नहीं है लेकिन कुछ सुगम्यता जो की बहुतही आवश्यक है वह विशेष विद्यालय में उपलब्ध है|

ग्राफसंख्या४.२.३

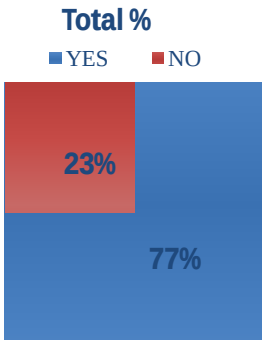

इस प्रकार सभी प्रश्नों के प्रत्युत्तर देखने के बाद यदि हम विद्यालय के संपूर्ण सुगम्यता कि बात करें तो हमने इसे एक ग्राफ के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है| ग्राफ संख्या ४.२.४ में यह दर्शाया गया है कि विद्यालय की सुगम्यता में ७७% सुगम्यता पाई गई है किंतु २३% सुगम्यता की अभी भी कमी है जिसकी वजह से कहीं ना कहीं श्रवण बाधित विद्यार्थी उच्चतर शिक्षा में प्रवेश करने में उनको कठिनाई होती है इसलिए जरूरी है कि हम सबसे पहले विद्यालय की सुगम्यता पर विशेष ध्यान दें|

अध्ययन की सीमाएं

1. इस अध्ययन में उन्हीं बच्चों को लिया गया है जो कि मुंबई में हिंदी इंग्लिश और मराठी माध्यम के स्कूल में अध्ययनरत हैं
2. इस अध्ययन में 6 से १० तक के कक्षा के श्रवण बाधित बच्चोंको ही शामिल किया गया है
3. समय सीमा को ध्यान में रखते हु एइस शोधकार्य को मुंबई जिले के अंतर्गत ही किया गया है
4. इस शोधमें उन विशेष बच्चों को लिया गया है जो कि हिंदी इंग्लिश, मराठी भाषा का प्रयोग करते हैं

सुझाव : इस अध्ययन में सरकारके लिए सुझाव, विद्यालय के लिए सुझाव बताया गया है-

१) सरकार के लिए सुझाव :

1. RPWD (2016) अधिनियम के साथ बेहतर संरेखित करने के लिए RTE अधिनियम में संशोधन करें|

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

2. दिव्यांग बच्चों के सभी शिक्षा कार्यक्रमों को प्रभावी रूप से लागू के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तहत एक समन्वय तंत्र स्थापित करना।
3. दिव्यांग बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा बजट में विशिष्ट और पर्याप्त वित्तीय आवंटन सुनिश्चित करें।
4. विशेष विद्यालयों की निगरानी हेतु एक कमेटी का गठन किया जाए जिससे विशेष विद्यालय की शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ उसकी सुगम्यता को ध्यान में रखते हु एउसमें सुधार किया जाए|

२) विद्यालय के लिए सुझाव :

1. श्रवण बाधित छात्रों की शिक्षा के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग काव्यापक रूप से विस्तार करें|
2. हर बच्चे को मौका दें कि किसी भी दिव्यांग बच्चे को पीछे न छोड़ें।
   विविध शिक्षार्थियों को शामिल करने में सहायता के लिए शिक्षण प्रथाओं को बदलना।
3. रूढ़िवादिता पर काबू पाएं और कक्षा और उसके बाहर, दिव्यांग बच्चों के प्रति सकारात्मक निश्चय का निर्माण करें|

सन्दर्भसूची :

Treder, David, W, Morse William C., Ferron, John, M. (2000) .The Relationship between Teacher Effectiveness and Teacher Attitudes toward Issues Related to Inclusion.Teacher Education and Special Education, Vol. 23, No. 3 pp.202- 10.

UNESCO (1994). World Conference on Special needs Education: Access and Equality. (Final Reports). Salamanca: Author

Salend, S. Johansen, M., Mumper, J., Chase, A. Pike K&Dorney J. (1997) Cooperative teaching the voices of two teacher. Remedial and Special Education, 18 (1), 3-11.

Schumm, J. S& Vaughn, S. (1992) Planning for Mainstream Special Education Students: Perceptions of general classroom teacher, Exceptionality, 3 pp.81 - 90.

Sen P.(2004-05), "The Status of Hearing aids used by the children with hearing impairment in special school in Mumbai - A survey" Unpublished Dissertation, Regd.No. 9, M.Ed. (H.I.), University of Mumbai.

Finitoz - Hieber, T. and Tillman, T. (1978). Room acoustics effects on monosyllabic world discrimination ability for normal and Hearing-Impairment Children. Journal of Speech and Hearing Research, 21,440-458.

Jha, M. M. (2002), School without walls! Inclusive Education for All, Reed Educational and Professional Publishing Ltd.

Kochhar C., West, L. and Taymans, M. Juliana (2000), "Successful Inclusion", Person Education Upper Saddle River, New Jersey.

Kumar K. (2006), A Study of Knowledge and Skills of Teacher for Inclusive Education of Students with Hearing Impairment, Regd.no - 45, Unpublished Dissertation of M.Ed. (H.I.), University of Mumbai

Ministry of Human Resource Development (MHRD) (1990) Toward an Enlightened and Human Society: NPE 1986- A Review. New Delhi: Government of India